



NCERT Solutions for Class 12 Hindi Core A Ch05 Gajanan Madhav Muktibodh

1. टिप्पणी कीजिए; गरबीली गरीबी, भीतर की

सरिता, बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल।

उत्तर:- • गरबीली गरीबी — कवि को गरीब होते हुए भी स्वयं पर गर्व है। उन्हें अपनी गरीबी पर ग्लानि या हीनता नहीं होती, बल्कि एक प्रकार का गर्व होता है।

• भीतर की सरिता — कवि के हृदय में बहने वाली कोमल भावनाएँ।

• बहलाती सहलाती आत्मीयता — किसी व्यक्ति के अपनत्व के कारण हृदय को मिलनेवाली प्रसन्नता।

• ममता के बादल — ममता का अर्थ है — अपनत्व। कवि प्रेयसी के स्नेह से पूरी तरह भीग गए हैं।

2. इस कविता में और भी टिप्पणी-योग्य पद-प्रयोग हैं।

ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।

उत्तर:- विचार-वैभव-मनुष्य को वैभवशाली बनाने के लिए केवल धन का होना आवश्यक नहीं है। मनुष्य अपने उच्च विचारों से भी धनी यानि वैभवशाली हो सकता है बल्कि मेरे अनुसार यही असली वैभव है।

3. व्याख्या कीजिए :

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँडेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर बह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता बह चेहरा है!
उपर्युक्त पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह बताइए कि
यहाँ चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर
अंधकार-अमावस्या में नहाने की बात क्यों की गई है?

उत्तर:- कवि ने प्रियतमा की आभा से, प्रेम के सुखद भावों से सदैव घिरे रहने की स्थिति को उजाले के रूप में चित्रित किया है। इन स्मृतियों से घिरे रहना आनंददायी होते हुए भी कवि के लिए असहनीय हो गया है क्योंकि इस आनंद से वंचित हो जाने का भय भी उसे सदैव सताता रहता है। तथा कवि प्रिय के प्रेम से खुद को मुक्त कर आत्मनिर्भर बन अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहते हैं। इसलिए कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार-अमावस्या में नहाने की बात करता है।

4.1 तुम्हें भूल जाने की

दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या

शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं

झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं

इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित

रहने का रमणीय यह उजेला अब

सहा नहीं जाता है।

यहाँ अंधकार-अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है और उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

उत्तर:- यहाँ ‘अंधकार-अमावस्या’ के लिए ‘दक्षिण ध्रुवी’ विशेषण इस्तेमाल किया गया है और उससे जैसे अंधकार का घनत्व और अधिक बढ़ गया है।

*****END*****